कर प्राण धारण करती होंगी।

इस बार हनुमान को निराश नहीं होना पड़ा। एक विशाल श्वेत रंग के चैत्यप्रासाद के मध्य उन्होंने कुछ राक्षसियों से घिरी हुई एक अत्यंत सुंदरी, किंतु मलिन रेशमीवस्त्र धारण किए हुए दुःखीयारी नारी को बैठे देखा। उन्हें सहसा स्मरण हो आया कि किष्किंधा के आकाश में राक्षस द्वारा हरण कर ले जानी वाली रोती हुई नारी यही तो है जिसके आभूषणों को पहचान कर राम ने उसके सीता होने की पुष्टि की थी! तो उनका लंका आना व्यर्थ नहीं गया...किंतु इस बार उन्होंने न पूंछ पटक कर खुशी मनाई और न ही उछलकूद की ।हां, मन ही मन अतीव प्रसन्न अवश्य हुए। हर्ष से आंखों में आंसू भी आ गये। एक बड़ा काम उनका जो सिद्ध हो गया था!

किंतु हनुमान जानते थे कि अभी भारी काम बचा है। उन्हें गुप्तचरी करनी थी। पहले तो यह जानना था कि माता सीता के साथ यहां कैसे व्यवहार हो रहा है तथा स्वयं उनके मन में क्या चल रहा है? सो वे रात के अंधेरे में चुपचाप एक विशाल अशोकवृक्ष में छिप कर सारी गतिविधियों पर पैनी नजर रखते हैं।

हनुमान ने पुनः गौर से सीता को देखा। बड़ी दयनीय लग रही थी जनकदुलारी रामप्रिया इस समय। पूरा शरीर मलिन हो गया था। वस्त्र भी मलिन थे पर फिर भी सौंदर्य सुवर्ण के समान दमक रहा था। श्रीराम के सर्वथा योग्य हैं यह देवी। मन ही मन हनुमान सोचते हैं ...इन्हीं के लिये राम ने बाली का वध किया, कबन्ध को मार गिराया, जनस्थान में खर आदि चौदह हजार राक्षसों का वध किया ! इनके लिये यदि वे समुद्रपर्यन्त पृथ्वी को उलट दें तो भी उचित ही होगा। इनसे बिछुड़कर श्रीराम के लिये शरीर धारण करना एक दुष्कर कर्म ही है। पृथ्वी को फाड़ कर प्रगट हुई इस जनकतनया को हनुमान ने मन ही मन प्रणाम किया किंतु सीता का दुःख उनके हृदय को जैसे मथे डाल रहा था। उनके सामने ही तरह-तरह की क्रूर एवं विकृत आकृति की राक्षसियां उन्हें लगातार रावण की पत्नी बनने डरा रही थी। बेचारी सीता डर भी जाती थी किंतु रट एक ही थी कि वे राम की धर्मपत्नी हैं, रावण की पत्नी कभी नहीं बनेगी।

फिर देखते-देखते रात का अंतिम प्रहर भी बीत गया। हनुमान ने देखा कि सूर्योदय के साथ ही एक नई आफत सीता के सिर पर रावण के रूप में प्रगट हुई। सौ सुंदरियों से घिरा कामी रावण सीता का प्रणययाचक बन कर अशोकवाटिका आ पहुंचा किंतु सीता का नकार सुन क्रोधित हो उनका अचानक प्राणभक्षक बन गया। फिर रानियों के समझाने पर उसने सीता के प्राण तो नहीं लिये पर उसकी रानी बनने के लिये उसने समय-सीमा निर्धारित कर दी। राक्षसियों से उसने कहा-दो महीने का समय मैं इसे दे रहा हूं ...यदि इसके बाद भी यह मेरी रानी बनने तैयार नहीं हुई तो इसे मारकर मेरे कलेवे में ले आना।

रावण ने तो दो माह का समय दिया था सीता को, पर राक्षसियां थीं कि रावण के जाते ही सीता को डराने के लिये उन्हें तत्काल मारने की योजना और स्वयं ही मापतौल कर बराबर हिस्सा कर खाने की येाजना बनाने लगीं। सीता का भयभीत होना स्वाभाविक था। उनका यह भय वैसा ही था जैसे जंगली कुत्तों के बीच घिरी किसी हिरणी का होता है। तभी त्रिजटा ने गत रात देखा स्वप्न सबको बताया कि शीघ्र ही राक्षसराज के साथ-साथ समस्त लंका दुर्दशा को प्राप्त करेगी और सीता का राम से पुनर्मिलन होगा। यह सुनकर राक्षसियां शांत हुईं। कुछ भयभीत भी हुईं। इससे सीता को कुछ राहत मिली। हनुमान भी कुछ निश्चिंत हुए और आगे की रणनीति पर विचार करने लगे।

यहां भी हनुमान की विचारधारा कितने ही तर्क करते हुए आगे बढ़ती है। पहली बात जो उनके ध्यान में आई वह थी कि सीता से कैसे मिला जाये क्योंकि एक तो उन्हें राम का संदेश देना आवश्यक है, दूसरे वह जिस अवस्था में हैं उसमें यदि उन्हें कोई सांत्वना नहीं मिली तो वह अवश्य अपना जीवन नष्ट कर लेंगी। ऐसी स्थिति में रावण से युद्ध करना व्यर्थ होगा। दूसरी बात, लौटने पर राम अवश्य उनसे पूछेंगे कि जानकी ने क्या संदेश भेजा है, इसलिये भी उनसे बात करना आवश्यक था। किंतु सीता से वार्तालाप कैसे किया जाये? हनुमान सोचते हैं, एक तो राक्षसियां चारों ओर से उन्हें घेर कर बैठी हैं। चलो, किसी तरह अवसर देखकर यदि मैंने उनसे कुछ कहा भी तो किस भाषा में कहूंगा? यदि मैं द्विज की भांति संस्कृत में बोलूंगा तो सीता मुझे रावण समझकर भयभीत हो जाएंगी। अतः मुझे सामान्य मनुष्य द्वारा बोली जाने वाली बोली का प्रयोग करना चाहिये, तभी सीता को मैं सांत्वना दे पाऊंगा। हनुमान यह भी सोचते हैं कि मैं किस रूप में उनके सामने प्रगट होऊं? यदि मैं वानर रूप में जाता हूं और मानवी भाषा में बात करता हूं तो भी वे भयभीत हो जाएंगी और मुझे मायावी रावण समझ जोर-जोर से चीखने लगेंगी। इससे ये भयानक राक्षसियां अस्त्र -शस्त्र ले मुझ पर टूट पड़ेंगी और इनकी चीख-पुकार सुन राक्षसगण भी आ जाएंगे...संभव है वे मुझे बंदी भी बना ले ...ऐसी स्थिति में श्रीराम का सीता प्राप्तिरुपी अभीष्ट कार्य ही नष्ट हो जायेगा। यदि मैं पकड़ा या मारा गया तब मुझे वानरों में कोई ऐसा वीर नहीं दिखता जो सौ योजन समुद्र लांघकर यहां आ सके। अतः राक्षसों को अभी युद्ध का मौका देना ठीक नहीं है (वा.रा.सुं.कां. सर्ग 30)।

भारी समस्या सामने थी। सीता से बात करो तो राक्षसों से युद्ध की संभावना है और न करो तो सीता के आत्महनन का खतरा है। हनुमान सोचते हैं...अविवेकी या असावधान दूत के हाथ में पड़ने पर बने बनाये काम भी देशकाल के विरोधी होकर उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं जैसे सूर्य के उदित होने पर चारों ओर फैला अंधकार अपने आप नष्ट हो जाता है।

अस्तु, किस प्रकार यह काम न बिगड़े, किस तरह मुझसे कोई असावधानी न हो जाये, किस प्रकार मेरा समुद्र-लंघन व्यर्थ न हो और कैसे सीता मेरी सारी बातें सुन लें, किंतु घबराहट में न पड़े... इन सब बातों पर विचार करके